कुरआने हकीम

अल्लामा नज्म आफ़न्दी

बे अमल मुस्लिम ये ग़फ़लत, मारिफ़त का खून है
कुछ ख़बर भी है कि कुरआँ, ज़ीस्त का क़ानून है।

ये जबीने अक़्ल पर है, इल्म की ताबिन्दगी
इसके हर इक लफ़्ज़ में है जिन्दगी ही ज़िन्दगी

इसकी क़िरअत से है रौशन, आलमे कुन की फ़ज़ा
इसने पैदा की है पाकीज़ा तमद्दुन की फ़ज़ा

हो गयी कुछ और ही वक़अत, फ़ने तज्वीद की
''रत्तलिल कुर्आन तरतीला'' ने जब ताईद की

नूर की लहरों से, ज़ेहने आदमीयत धुल गया
हुक्मे 'इक़रअ्' आते ही ये बाबे हिकमत खुल गया

गुल न होगा जो कभी ऐसा चिराग़े तूर है
नस्ले आदम के लिए ये आख़िरी दस्तूर है

जाद–ए–अख़लाक़ में तदबीरे मन्ज़िल है यही
ख़ल्क़ में इन्सानियत का दर्से कामिल है यही

है हर इक मौजूअ़ पर इफ़्हाम भी तफ़्हीम भी
ज़िक्रे हक़ भी और हक़्कुन्नास की तालीम भी

सीधे–सीधे चन्द लफ़्ज़ों में कुछ ऐसा कह गया
फ़लसफ़ा कुरआन का मुंह देखता ही रह गया

दिल जलों ने फ़र्क़ समझा आग में और धूप में
''इश्तिराकीयत'' दिखाई इसने अस्ली रूप में

ये मुकम्मल दर्स है इन्सां बनाने के लिए
इक निसाबे ज़िन्दगी है हर ज़माने के लिए

क्यों न "ला यख़्लू अनिल हिकमत", हो कुरआने हकीम
अम्ने आलमगीर है, मक़्सूदे कुरआने हकीम

इसके सर सेहरा है 'बिस्मिल्लाह' की तन्सीब का
इसके सर पर ताज है, इस्लाम की तहज़ीब का

तुझको 'बाबुलइल्म' से, हासिल है फ़ख़्रे इन्तेसाब
रू–ए–मअ़ना से उलट, ऐ दोस्त लफ़्ज़ों की नक़ाब

पूछ हर मालूमो ना मालूम, 'बाबे इल्म' से
आयतें कुरआँ से ले, मफ़्हूम 'बाबे इल्म' से

नश्र कर अपने अमल से, शरअ़ के पैग़ाम का
है अगर मुस्लिम, नमूना बन के रह, इस्लाम का!

●●●

मद्हे इमामे हसन अ०

मोहतरमा तनज़ीम ज़हरा कनीज़ अकबरपूरी

जो शख़्स जितना है हसने मुजतबा से दूर
उतना ही वो रहेगा रसूले खुदा से दूर

हम हैं ग़रीक़े बहरे करम रह के नाव पर
मुर्दा हैं जो हैं कश्ती से और नाखुदा से दूर

इस अहदे बेखुलूस के आलम अजीब हैं
दौलत से लौ लगाये हैं, पर हैं खुदा से दूर

आंखें हैं ठीक, कज नज़री के शिकार हैं
रखते हैं कान फिर भी हैं सम्ए सदा से दूर

वो उस क़दर क़रीब जहन्नम से हो गया
जो जिस क़दर हुआ पिसरे फ़ातिमा से दूर

कैसे दरे हसन से उठे सर कनीज़ का
माही खुशी से कैसे हो आबे बक़ा से दूर

●●●